# श्री बाबा गंगाराम चालीसा

अलख निरंजन आप हैं, निरगुण सगुण हमेस।
नाना विधि अवतार धर, हरते जगत कलेष।।
बाबा गंगारामजी , हुए विष्णु अवतार ।
चमत्कार लख आपका, गूंज उठी जयकार ।।

।।चौपाई।।

गंगाराम देव हितकारी, वैश्य वंश प्रगटे अवतारी ।।1।।
पूर्व जन्म फल अमित रहेऊ , धन्य धन्य पितु मातु भयेऊ ।।2।।
उत्तम कुल उत्तम सतसंगा, पावन नाम राम अरू गंगा ।।3।।
बाबा नाम परम हितकारी, सत सत वर्ष सुमंगलकारी ।।4।।
बीतहि जन्म देह सुधि नांहि, तपत तपत पुनि भयेऊ सुसाई ।।5।।
जो जन बाबा में चित लावा, तेहि परताप अमर पद पावा ।।6।।
नगर झुंझुनू धाम तिहारो, शरणागत के संकट टारो ।।7।।
धरम हेतु सब सुख बिसराये, दीन हीन लखि हृदय लगाये ।।8।।
एहि विधि चालिस वर्ष बिताये, अन्त देह तजि देव कहाये ।।9।।
देवलोक भई कंचन काया, तब जनहित संदेश पठाया ।।10।।
स्वप्न देवकीनन्दन पावा, भावी करम जतन बतलावा ।।11।।
आपन सुत को दर्शन दीन्हों, धरम हेतु सब कारज कीन्हों ।।12।।
नभ वाणी जब हुई निशा में, प्रगट भई छवि पूर्व दिशा में ।।13।।
ब्रम्हा विष्णु शिव सहित गणेशा ,जिमि जनहित प्रगटेउ सब ईशा ।।14।।
चमत्कार एहि भांति दिखावा, अन्तरध्यान भई सब माया ।।15।।
गायत्री संग करहिं विचारा, मन मंह गंगाराम पुकारा ।।16।।
जो जन करई मनौती मन में, बाबा पीर हरहिं पल छन में ।।17।।
ज्यों निज रूप दिखावहिं सांचा, त्यों त्यों भक्तवृन्द तेहिं जांचा ।।18।।

उच्च मनोरथ शुचि आचारी, राम नाम के अटल पुजारी ।।19।।

जो नित गंगाराम पुकारे, बाबा दुख से ताहिं उबारे ।।20।।

बाबा में जिन्ह चित्त लगावा, ते नर लोक सकल सुख पावा ।।21।।

परहित बसहिं जाहिं मन मांही, बाबा बसहिं ताहिं तन माहिं ।।22।।

धरहिं ध्यान रावरो मन में, सुख संतोष लहैं तन मन में ।।23।।

धर्म वृक्ष जेहि तन मन सींचा, पार ब्रम्ह तेहि निज में खींचा ।।24।।

गंगाराम नाम जो गावे, लहि बैकुण्ठ परम पद पावे ।।25।।

बाबा पीर हरहिं सब भांति, जो सुमिरे निश्छल दिन राती ।।26।।

दीन बन्धु दीनन हितकारी, हरो पाप हम शरण तिहारी ।।27।।

पंचदेव तुम पूर्ण प्रकाशा , सदा करो संतन मंह बासा ।।28।।

तारण तरण गंग का पानी, गंगाराम उभय सुनिशानी ।।29।।

कृपासिन्धु तुम हो सुखसागर, सफल मनोरथ करहु कृपाकर ।।30।।

झुंझुनूं नगर बड़ा बड़ भागी, जहं जन्में बाबा अनुरागी ।।31।।

पूरन ब्रम्ह सकल घटवासी, गंगाराम अमर अविनाशी ।।32।।

ब्रम्ह रूप देव अति भोला, कानन कुण्डल मुकुट अमोला ।।33।।

नित्यानन्द तेज सुख रासी, हरहुं निशातम करहुं प्रकासी ।।34।।

गंगादशहरा लागहि मेला, नगर झुंझुनूं मंह शुभ बेला ।।35।।

जो नर कीर्तन करहिं तुम्हारा, छवि निरखि मन हरष अपारा ।।36।।

प्रातः काल ले नाम तुम्हारा, चौरासी का हो निस्तारा ।।37।।

पंचदेव मन्दिर विख्याता, दरशन हित भगतन का तांता ।।38।।

जय श्री गंगाराम नाम की, भवतारण तरि परम धाम की ।।39।।

महावीर ' धर ध्यान पुनीता, विरचेउ गंगाराम सुगीता ।।40।।

दोहा - सुने सुनावे प्रेम से, कीर्तन भजन सुनाम ।

मन इच्छा सब कामना, पूरई गंगाराम।।

।। इति शुभम् भूयात् ।।